८. नरई

– डॉ. श्रीकांत उपाध्याय

न्यू जलपाईगुड़ी । जो ट्रेन अलीपुरद्वार और दिल्ली के बीच चलती है, उसका नाम 'महानंदा एक्सप्रेस' है । उत्तर बंगाल की प्रमुख नदी है महानंदा ।

हम इलाहाबाद जा रहे हैं । महानंदा एक्सप्रेस का आगमन दोपहर पौने दो बजे है । यह ट्रेन अकसर देर करती जाती है । बड़ी ट्रेनों को रास्ता देना महानंदा का स्वभाव बन गया है और रुकी हुई ट्रेन से उतरकर प्लेटफॉर्म पर इधर-उधर देखना मेरी फितरत ।

महानंदा प्लेटफॉर्म पर आकर खड़ी हो गई है । कहाँ है ए.सी.टू कोच ? ढूँढ़ते रह जाओगे । टी.टी.ई ए.सी-टू के यात्रियों को ए.सी-थ्री में बर्थ दे रहे हैं । वरिष्ठ नागरिक होने के कारण हमें नीचे की बर्थ मिल गई है । यह मेरे लिए राष्ट्रीय पुरस्कार है । काँच की खिड़की के पार मेरा गाँव-देश है और गाँव-देश के बिंब-प्रतिबिंब । मैं ठहरा बिंब-प्रतिबिंबों का एक अदद द्रष्टा ।

ट्रेन न्यू जलपाइगुड़ी से निकल चुकी है और जो केले और अब केले और अनन्नास की मनोरम दृश्यावली के बीच से गुजर रही है । स्वस्थ-प्रसन्न है अनन्नास की खेती लेकिन मुझे प्लेटफॉर्म पर हॉकर ने अनन्नास के टुकड़े दिए थे, वे लगभग कच्चे थे । छल कहाँ नहीं उपस्थित है ?

किशनगंज आ रहा है । बिहार का सीमांत स्टेशन । बंगाल और बिहार की मिलीजुली भाषा और संस्कृति । अदृश्य सरस्वती के रूप में नेपाली भी विद्यमान है । कच्चे-पक्के, घर-झोंपड़े-बाड़ी । बाँस की कोठियाँ । आम-कटहल-केले । कहीं-कहीं सुपारी और नारियल । धान और जूट के खेत । कुछ पोखरों में जूट के बोझ ('पूरे' बुंदेलखंडी में) बेहे गए हैं । माटी-पाथर से दाबकर बोझ को पानी में डुबोया गया है जूट को गलाने के लिए । गलने पर ही रेशे उतरते हैं । रेशे ही तो जूट हैं । सूखने के बाद रेशे के लच्छे और गोले जूट की मिलों में पहुँचते हैं और मिलों से टाट-पट्टियाँ, बोरे-बोरियाँ तथा न जाने कितने आकार-प्रकार में राष्ट्र की देहरी पर उपस्थित होते हैं । दुर्भिक्ष के वक्ष पर चढ़े अन्न के बोरे कितने गौरवशाली लगते हैं ।

मेरे बचपन में गाँव की गड़ही के पानी में ऐसे ही सनई बेही जाती थी । अब न सनई रही न गड़ही रही । गाँव के दुर्दांत ने गड़ही दबोच ली । सन-सुतली की रस्सियाँ स्मृतिशेष हो गईं ।

परिचय

जन्म : १९३८, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
परिचय : डॉ. श्रीकांत उपाध्याय जी सुपरिचित साहित्यकार हैं । आप राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला, पुणे में 'रीडर' के रूप में सेवा दे चुके हैं । आपकी रचनाएँ विविध पत्र-पत्रिकाओं में नियमित छपती रहती हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'ये रहीम दर दर फिरहिं', 'बिनु गोपाल बैरिनि भईं कुंजैं', 'बागे अनहद तूर', 'दस डिग्री चैनल' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत यात्रा वर्णन में श्रीकांत जी ने रेल से की गई यात्रा का वर्णन किया है । यात्रा में दिखाई देने वाले सुंदर, प्राकृतिक दृश्यों का मनोहारी वर्णन इस पाठ की विशेषता है ।

मौलिक सृजन

'सड़क दुर्घटनाओं के कारण एवं रोकने के उपाय' पर अपने विचार लिखो ।

संभाषणीय

हेल्मेट पहनने के लाभों के बारे में कक्षा में चर्चा करो ।

श्रवणीय

'बालिका दिवस' पर मनाए जाने वाले कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि का भाषण सुनते समय भाषा की व्यवस्था, उचित विराम, बलाघात के साथ शुद्ध उच्चारण की ओर ध्यान दो ।

जूट के गलने से उसका रंग पानी में उतर आया है । पूरा पोखर कलुआ गया है । ऐसे विषैले पानी में मछलियों को साँस लेने में दिक्कत होती है । वे इच्छामृत्यु माँगती है । साफ-सुथरे पानीवाले पोखरों के किनारे पानी में बंसी डालकर बैठे हैं ध्यानावस्थित लोग । कब मछली कँटिये की डंडी झकझोरे, कब बंसी की डोर मछली को खींचे ।

ये वही लोग हैं, जिन्होंने पिछले तीन महीनों में जी-तोड़ मेहनत की है । जोताई, बोआई, रोपाई, निराई । तब कहीं जाकर धान की हरीतिमा लहराती है । अब उन्हें फुरसत मिली है । बंसी लेकर पोखर के किनारे बैठना उनका शौक है । उनका मछली से गहरा नाता है । इस शौक में तन-मन एकाग्र हो जाता है । महानंदाएँ आती-जाती रहें । न कुछ और दिखाई देता है, न कुछ और सुनाई देता है । दीन-दुनिया से बेखबर ।

और उधर कालियाचक में क्या हो रहा है ? दूर नहीं है मालदा । प्रसिद्ध है आम के लिए बंगाल का जिला मालदा । उसी जिले का एक उपनगर है-कालियाचक । कालचक्र का तद्भव रूप है-कालियाचक । कितना विद्रूप हो गया है तद्भव ।

यह उपनगर बांग्लादेश की सीमारेखा पर अवस्थित है । सीमा रेखा पर बाड़ खड़ी है । बाड़ के दोनों ओर खेत हैं । पुलिस और बी.एस.एफ. है । खेत में मजदूर-किसान काम कर रहे हैं । किंशनगंज के बाद परिदृश्य बदल जाता है । उत्तर बिहार का वह विस्तृत भूभाग आरंभ होता है, जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी विनाशलीला करता है । जहाँ तक देख पा रहा हूँ-पानी-ही-पानी । पेड़-रूख पानी में । घर-द्वार पानी में । कहाँ गए लोग ? कहाँ गए पशु-पक्षी ? बाढ़ तो एक महीने पहले आई थी, लेकिन अभी भी पानी उतरा नहीं है । भौगोलिक दृष्टि से उत्तर बिहार का यह अंचल धँसा हुआ है । प्रतिवर्ष हवाई सर्वेक्षण ।

ऊँची जमीन की विशद पट्टी पर रेलवे लाइन बिछी हुई है । महानंदा पानी के आक्षितिज विस्तार के बीच चली जा रही है । कुछ स्टेशनों के करीब राहत शिविर लगे हुए हैं । जनसंख्या विस्फोटक बच्चे खेल-कूद रहे हैं । सर्वहारा परिवार की एक स्त्री शिविर के द्वार पर बैठी दर्पण के सामने केश विन्यास कर रही है ।

बिहार का शोक-ओ कोसी ! अगर श्मशान भूमि में भी शिविर लगा दिया जाए तो भी वह विस्थापित परिवार की कुलवधू मसान की पीठ पर बैठकर वेणी संहार करेगी ।

इधर बाढ़ में डूबा बिहार पानी से मुक्ति चाहता है, उधर महाराष्ट्र का मराठवाड़ा और उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड परम वृष्टि पाकर निहाल हो रहे हैं । कटिहार के बाद भू-दृश्य फिर बदलता है । बाढ़ के दृश्य अब

नहीं दिख रहे हैं । शाम का धुँधलका उतर रहा है ।

बिहार रात की बाँहों में और मैं निद्रा के अनंत में ।

सवेरा हो गया है । दक्षिण बिहार की धान मेखला रात में आई और चली गई । मुगलसराय पीछे छूट गया है । महानंदा चुनार-मिरजापुर क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है ।

कहाँ हैं देवकीनंदन खत्री के उपन्यास-चंद्रकांता और चंद्रकांता संतति में वर्णित वे रहस्यमय जंगल और खोह-कंदराएँ ? रेलवे लाइन के आस-पास कुछ जंगली पेड़, कटी-पिटी जमीन और नदी-नाले के पार्श्व में रहने वाले सरपत अवश्य दिख रहे हैं । ये प्रतीक हैं जंगल के, नदी-नाले के । अब हम प्रकृति को प्रतीकों में देखा करेंगे ।

पानी में प्रसन्नचित्त खड़े हैं धान । नीचे रेलवे लाइन के किनारे वर्षा ऋतु ने जगह-जगह जलाशय बना दिए हैं । कुई से समन्वित हैं ये जलाशय । अचानक एक जलाशय दृष्टि-पथ में आता है और अपनी संपूर्ण दिव्यता के साथ मेरे मानस-फलक पर अंकित हो जाता है । नहीं मिटेगी जन्म-जन्मांतर तक वह छवि ।

जलाशय का पानी उज्ज्वल नीलमणि-सा दमक रहा है । अपने-अपने मृणाल पर प्रार्थनामय मुद्रा में, पानी में खड़ी हैं कुमुदिनियाँ । खिली-अधखिली-अनखिली । पानी पर ठहरे हैं कुमुदिनी-पत्र । पानी के अरण्य में विहार कर रही हैं नन्हीं-नन्हीं मछलियाँ ।

जलाशय के किनारे छिछले पानी में खड़ी है एक घास-नरई । इसमें न कोई गाँठ, न कोई पत्ता । भीतर से पूरी तरह खाली-खोखली । एक नरम शलाका सूर्योन्मुखी ।

कोई देखे, न देखे । कोई चीन्हे, न चीन्हे । कोई जाने, न जाने । सृष्टिकर्ता तो देखता है । सिरजनहार तो चीन्हता है । प्रतिपालक तो जानता है । शायद गंगा पार काशी के मध्यकालीन संत ने नरई के किसी पूर्वज को कहीं देखा था और एक कालजयी साखी रच दी-

सतगंठी कौपीन दै, साधु न मानै संक ।
राम अमलि माता रहै, गिनै इंद्र कौ रंक ।।

भस्मस्नात देह पर सात गाँठों से गठा कौपीन धारण कर साधु जब भागीरथी के तट पर सूर्योदय-सा खड़ा होता है, तो वह जीवन और जगत् का महानायक हो जाता है, जिसका तेज-प्रताप देखकर पंचमहाभूत-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश रोमांचित हो उठते हैं ।

—— ० ——

लेखनीय

पठित पाठों के कठिन शब्दों का द्विभाषी शब्दकोश तैयार करो ।

पठनीय

प्रसार माध्यमों में प्रकाशित जानकारी की आलंकारिक शब्दावली का प्रभावपूर्ण तथा सहज वाचन करो । जैसे-विज्ञापन आदि ।

शब्द संसार

सनई = छोटा पौधा जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है
गड़ही = छोटा गड्ढा
दुर्दांत = बेकाबू
द्रष्टा = दूर दृष्टि वाला
दुर्भिक्ष = अकाल, अभाव
सरपत = सरकंडा
अवस्थित = टिका हुआ, ठहरा हुआ
मृणाल = कमल की जड़
कौपीन = लँगोटी

मुहावरा

निहाल होना = आनंदित होना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

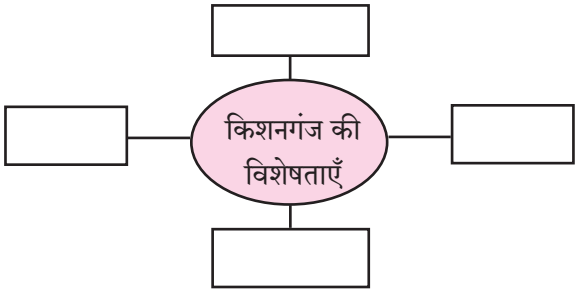

(२) विधानों का सही/गलत वर्गीकरण करो :

१. बंगाल का जिला मालदा आम के लिए प्रसिद्‌ध है ।
२. शाम का धुँधलका उतर रहा है ।
३. पानी में खड़े हैं प्रसन्नचित्त मछुआरे !
४. जलाशय का पानी उज्ज्वल नीलमणि-सा महक रहा है ।

(३) पाठ में प्रयुक्त खेती से संबंधित शब्द :

१. ____________________
२. ____________________
३. ____________________
४. ____________________

(४) उत्तर लिखो :

१. लेखक ने इस ट्रेन से यात्रा की -------
२. उत्तर बंगाल की प्रमुख नदी -------
३. ऐसे पानी में मछलियों को साँस लेने में दिक्कत होती है -------

MFGUAJ

सदैव ध्यान में रखो प्राकृतिक सुंदरता बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है ।

भाषा बिंदु पाठों में आए दस वाक्य (रचना के अनुसार) ढूँढ़कर लिखो ।

उपयोजित लेखन **सुवचन के आधार पर कहानी लिखो और उसे उचित शीर्षक दो :**
'बहाने नहीं सफलता के रास्ते खोजो !'

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन साइकिल का उपयोग और उसकी आवश्यकता संबंधी अपने विचार लिखो ।